डॉ. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 55.02.26
स्वीकृतः 07.03.26

14

अखिलेश कुमार चौरसिया
शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र संकाय)
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ
ईमेलः *akc1049@gmail.com*

डॉ. मणि जोशी
एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र विभाग)
श्री जय नारायण मिश्र पी.जी. कॉलेज
लखनऊ
ईमेलः *drmanijoshi9@gmail.com*

सारांश

डॉ. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचार भारत के समग्र, मूल्उ यपरक और नवोन्मेशी शिक्षा–दर्शन का सशक्त प्रतिपादन करते हैं। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र–निर्माण, सृजनात्मकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और राष्ट्रनिर्माण की चेतना का विकास करना है। प्रस्तुत अध्ययन में डॉ. कलाम के शैक्षिक दृष्टिकोण का राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण किया गया है।

डॉ. कलाम ने 'इग्नाइटेड माइंड्स' की संकल्पना के माध्यम से युवाओं में नवाचार, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी–आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भी बहुविषयक शिक्षा, कौशल विकास, आलोचनात्मक चिंतन और अनुभवात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करती है, जो कलाम के विचारों से पूर्णतः सामंजस्य रखती है। नीति में 5334 संरचना, मातृभाषा में शिक्षा, डिजिटल साक्षरता तथा आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा जैसे प्रावधान, कलाम के 'विजन 2020' के अनुरूप हैं। इसके अतिरिक्त, डॉ. कलाम ने शिक्षक को राष्ट्रनिर्माता माना और शिक्षा में नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिकता तथा वैज्ञानिक चेतना के संतुलन की आवश्यकता पर बल दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भी मूल्य–आधारित शिक्षा, समावेशिता और शोध–संस्कृति को सुदृढ़ करने की दिशा में कार्य करती है।

अतः स्पष्ट है कि डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचार और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के उद्देश्यों में गहन वैचारिक साम्यता विद्यमान है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि यदि नीति के प्रावधानों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो भारत ज्ञान–आधारित, आत्मनिर्भर और नवोन्मेशी राष्ट्र के रूप में उभर सकता है।

मुख्य शब्द

शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षालय, पाठ्यक्रम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, नवाचार, रचनात्मकता, राष्ट्र निर्माण।

प्रस्तावना

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, जिन्हें 'मिसाइल मैन ऑफ इंडिया' के नाम से जाना जाता है,

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.14

एक ऐसे बहुमुखी व्यक्तित्व थे जिन्होंने न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, बल्कि शिक्षा और राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में भी अमिट छाप छोड़ी। तमिलनाडु के रामेश्वरम के एक साधारण परिवार में जन्मे डॉ. कलाम ने अपनी असाधारण प्रतिभा, ज्ञान, कड़ी मेहनत और लगन से भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विष्व में अपना कीर्तिमान स्थापित किया। उनके नेतृत्व में, भारत ने अग्नि और पृथ्वी जैसी मिसाइलों का सफल परीक्षण किया और अपने राष्ट्रीय परमाणु कार्यक्रम को एक नई दिशा प्रदान की। विज्ञान और राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण के लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण (1981), पद्म विभूषण (1997) और भारतरत्न (1997) जैसे सर्वोच्च सम्मानों से नवाजा गया।

डॉ. कलाम की सबसे गहरी पहचान एक वैज्ञानिक या राष्ट्रपति के रूप में नहीं, बल्कि एक शिक्षक और एक दूरदर्शी शिक्षाविद के रूप में थी। वे स्वयं को एक वैज्ञानिक से अधिक एक शिक्षक मानते थे, और उनका निधन भी शिलांग में भारतीय प्रबंधन संस्थान में छात्रों को संबोधित करते हुए हुआ। उनका मानना था कि शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह एक ऐसा उपकरण है जो एक व्यक्ति को जिम्मेदार, नैतिक और सशक्त नागरिक बना सके। यह शोध पत्र डॉ. कलाम के इसी शैक्षिक दर्शन का गहराई से विश्लेषण करता है और इसे वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली, विशेश रूप से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–२०२०, के परिप्रेक्ष्य में देखता है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

भारतीय शिक्षा प्रणाली, अपनी ऐतिहासिक जड़ों और आधुनिक चुनौतियों के साथ, एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है। जहाँ एक ओर हम वैश्विक प्रतिस्पर्धा में शामिल हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर हमारी शिक्षा प्रणाली में कई कमियाँ मौजूद हैं, जैसे– रटने पर अत्यधिक जोर, नवाचार की कमी, और नैतिक मूल्यों का क्षरण। ऐसे में, डॉ. कलाम के शिक्षा दर्शन का अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। उनके विचार एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की वकालत करते हैं जो इन कमियों को दूर कर सके और एक सशक्त, नवाचारी और नैतिक समाज का निर्माण कर सके। यह शोध पत्र इस बात पर प्रकाश डालेगा कि कैसे उनके विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रमुख सिद्धांतों के साथ मेल खाते हैं, और कैसे उनका दर्शन भारत को एक ज्ञान–आधारित समाज और एक विकसित राष्ट्र बनाने के मार्ग को प्रशस्त कर सकता है।

शोध के उद्देश्य

- डॉ. कलाम के शैक्षिक दर्शन के मूल सिद्धांतों, विशेषकर शिक्षा के उद्देश्यों, और शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षालय एवं पाठ्यक्रम की उनकी अवधारणाओं का गहन विश्लेषण करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रमुख उद्देश्यों और प्रावधानों का अध्ययन करना और डॉ. कलाम के शैक्षिक विचारों के साथ उनकी समानता और सामंजस्य स्थापित करना।
- यह मूल्यांकन करना कि डॉ. कलाम के विचार वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के समक्ष मौजूद चुनौतियों का समाधान कैसे प्रदान कर सकते हैं।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के सफल कार्यान्वयन के लिए डॉ. कलाम के दर्शन के आधार पर व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

डॉ. कलाम के शैक्षिक विचार का वर्तमान शिक्षा में महत्व

शिक्षा के उद्देश्य : डॉ. कलाम के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं, बल्कि एक ऐसे भारतीय नागरिक का निर्माण करना था जो नैतिक रूप से सशक्त, वैज्ञानिक सोच से युक्त, और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार हो। उनके शिक्षा दर्शन के प्रमुख उद्देश्य थेः

- **मूल्यों और नैतिकता का विकास** : डॉ. कलाम का मानना था कि शिक्षा को छात्रों में ईमानदारी, करुणा और राष्ट्रीय गौरव जैसे मूल्यों को स्थापित करना चाहिए।
- **वैज्ञानिक सोच का विकास** : वे चाहते थे कि छात्र तर्क और प्रमाण के आधार पर हर चीज को परखें। उन्होंने छात्रों को अन्वेषण और नवाचारों के लिए प्रेरित किया।
- **उद्यमिता और कौशल विकास** : उनका मानना था कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो जो छात्रों को केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि निर्माता बनाए, जिससे वे भविष्य में रोजगार सृजन कर सकें।
- **राष्ट्र निर्माण** : डॉ. कलाम के लिए शिक्षा का अंतिम उद्देश्य एक मजबूत और विकसित राष्ट्र का निर्माण करना था। उनका मानना था कि 2020 तक भारत को विकसित देश बनाने का सपना युवाओं की शिक्षा के माध्यम से ही साकार हो सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के साथ सामंजस्य

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने हमेशा शिक्षकों को समाज का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ माना, जो केवल ज्ञान प्रदान करने वाले नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करने वाले सच्चे शिल्पकार हैं। उनका यह दूरदर्शी दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, जो शिक्षकों को शिक्षा प्रणाली के केंद्र में रखती है। दोनों के विचारों में गहरी समानताएं और उद्देश्य हैं, जिन्हें एक तुलनात्मक तालिका के माध्यम से और अधिक गहराई से समझा जा सकता है।

डॉ. कलाम और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के बीच शिक्षकों की भूमिका का तुलनात्मक विश्लेषण

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का दृष्टिकोण	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का दृष्टिकोण	राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020
भूमिका का सार	राष्ट्र–निर्माताः शिक्षक केवल एक पेशेवर नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक, मेंटर और राष्ट्र–निर्माता हैं। वे छात्रों के चरित्र और भविष्य को आकार देते हैं।	सशक्तिकरण और केंद्र–बिंदुः नीति शिक्षकों को शिक्षा प्रणाली का हृदय मानती है। उन्हें निर्णय लेने की स्वतंत्रता और नवाचार के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है।
चरित्र और नैतिकता	मूल्य–आधारित शिक्षाः शिक्षक का सबसे बड़ा कर्तव्य छात्रों में ईमानदारी, नैतिकता, साहस और करुणा जैसे मानवीय मूल्यों का विकास करना है।	मूल्य–आधारित पाठ्यक्रमः राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारतीय मूल्यों, संवैधानिक मूल्यों, और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर जोर देती है, जिसका कार्यान्वयन शिक्षक करते हैं।
सृजनात्मकता और जिज्ञासा	'इग्नाइटेड माइंड्स': शिक्षक छात्रों के दिमाग में आग लगाने वाले होते हैं। उनका काम छात्रों को सवाल पूछने, जिज्ञासा जगाने और नए विचारों को विकसित करने के लिए प्रेरित करना है।	आलोचनात्मक सोच और नवाचारः नीति रटने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करती है और शिक्षकों को छात्रों में आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, और समस्या–समाधान कौशल को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करती है।
व्यावसायिक विकास	आजीवन सीखने वालाः डॉ. कलाम ने शिक्षकों के निरंतर सीखने और अपने ज्ञान को अपडेट रखने पर जोर दिया ताकि वे छात्रों के लिए एक आदर्श बन सकें।	सतत व्यावसायिक विकासः राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 शिक्षकों के लिए प्रति वर्ष 50 घंटे के सतत व्यावसायिक विकास को अनिवार्य बनाती है ताकि वे नई शिक्षण तकनीकों और डिजिटल उपकरणों से अपडेट रहें।
तकनीक का उपयोग	तकनीकी सशक्तिकरणः डॉ. कलाम ने शिक्षा में प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग पर जोर दिया ताकि शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया अधिक आकर्षक और सुलभ बन सके।	डिजिटल शिक्षा को बढ़ावाः नीति ऑनलाइन शिक्षण सामग्री के विकास, शिक्षकों को तकनीकी रूप से कुशल बनाने, और प्रौद्योगिकी–आधारित मूल्यांकन को अपनाने पर ध्यान केंद्रित करती है।
छात्रों के लिए आदर्श	प्रेरणा और मार्गदर्शनः डॉ. कलाम मानते थे कि शिक्षक अपने व्यवहार और जीवन से छात्रों के लिए आदर्श बनते हैं। वे केवल पढ़ाते नहीं, बल्कि छात्रों को सही रास्ते पर चलने का मार्गदर्शन करते हैं।	समग्र विकास का सूत्रधारः नीति के तहत शिक्षक सिर्फ ज्ञान नहीं देते, बल्कि छात्रों के समग्र विकास (बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.14

डॉ. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक विश्लेषण

समानता

यह तुलनात्मक विश्लेषण स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि डॉ. कलाम के शैक्षिक विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के लिए एक दार्शनिक आधार के रूप में कार्य करते हैं। डॉ. कलाम की दृष्टि में, शिक्षक एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं जो न केवल तकनीकी रूप से उन्नत है, बल्कि नैतिक रूप से भी समृद्ध है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 इन्हीं विचारों को एक संस्थागत और नीतिगत ढाँचा प्रदान करती है। यह नीति शिक्षकों को वह सम्मान, स्वायत्तता और व्यावसायिक विकास प्रदान करने का प्रयास करती है जिसकी वकालत डॉ. कलाम ने हमेशा की थी।

डॉ. कलाम का दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की नीति एक ही लक्ष्य की ओर इशारा करते हैं: एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना जहाँ शिक्षक केवल एक नौकरी करने वाले नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक और प्रेरणा स्रोत हों। यह शिक्षक ही हैं जो छात्रों के मन में जिज्ञासा और रचनात्मकता की आग जलाकर उन्हें एक विकसित भारत के सपने को साकार करने के लिए सशक्त कर सकते हैं।

डॉ. कलाम के शैक्षिक विचारों को लागू करने की चुनौतियाँ और समाधान

डॉ. कलाम ने जिस शिक्षा प्रणाली की कल्पना की थी, वह न केवल ज्ञान पर, बल्कि नैतिकता, रचनात्मकता, और आत्मनिर्भरता पर आधारित थी। इस दृष्टिकोण को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पूरी तरह से एकीकृत करना कई चुनौतियों से भरा है, जिनके समाधान के लिए हमें एक व्यापक और बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है।

चुनौती 1 : शिक्षकों का अपर्याप्त प्रशिक्षण और मानसिकता

वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण अक्सर सैद्धांतिक ज्ञान पर केंद्रित होता है और छात्रों में रचनात्मकता और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान नहीं करता। कई शिक्षकों की मानसिकता भी पारंपरिक शिक्षण विधियों तक सीमित होती है।

समाधान

- **विशेषज्ञता–आधारित प्रशिक्षण** : सरकार को शिक्षक प्रशिक्षण (बी.एड.डी. एड. डी.एल. एड) कार्यक्रमों में सुधार करना चाहिए और उनमें डॉ. कलाम के शिक्षा दर्शन, प्रोजेक्ट–आधारित शिक्षण और वैज्ञानिक स्वभाव को शामिल करना चाहिए।
- **मासिक कार्यशालाएँ** : शिक्षकों के लिए मासिक कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए, जहाँ उन्हें नवाचार और समस्या–समाधान जैसे कौशलों पर प्रशिक्षित किया जाए। इन कार्यशालाओं को डिजिटल उपकरणों के उपयोग पर भी केंद्रित होना चाहिए।
- **नेतृत्व विकास** : शिक्षकों को केवल कक्षा में पढ़ाने वाले व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि समुदाय और स्कूल के नेतृत्वकर्ता के रूप में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

चुनौती 2 : वित्तपोषण और संसाधनों की कमी

डॉ. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों को साकार करने के लिए, स्कूलों को उन्नत

प्रयोगशालाओं, डिजिटल उपकरणों और व्यावसायिक शिक्षा के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे की आवश्यकता होगी। ग्रामीण और सरकारी स्कूलों में अक्सर इन संसाधनों की कमी होती है।

समाधान

- **निजी–सरकारी भागीदारी** : सरकार को निजी क्षेत्र के साथ मिलकर स्कूलों के लिए प्रयोगशालाओं, कंप्यूटर लैब और व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों के निर्माण के लिए पहल करनी चाहिए।
- **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व** : कंपनियों को शिक्षा के क्षेत्र में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत निवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- **विशेष 'नवाचार कोष'** : प्रत्येक स्कूल के लिए एक विशेष 'नवाचार कोष' स्थापित किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षक अपने रचनात्मक शिक्षण विचारों को लागू करने के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकें।

चुनौती 3 : पारंपरिक मूल्यांकन प्रणाली

हमारी वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली मुख्य रूप से रटने और याद करने पर आधारित है, जो छात्रों की सृजनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और व्यावहारिक कौशल का सही मूल्यांकन नहीं करती। यह डॉ. कलाम के विचारों के पूरी तरह से विपरीत है।

समाधान

- **समग्र मूल्यांकन** : मूल्यांकन प्रणाली को केवल परीक्षा–आधारित न रखकर, इसमें प्रोजेक्ट वर्क, समूह चर्चा, व्यावहारिक कार्य और छात्रों के पोर्टफोलियो को शामिल किया जाना चाहिए।
- **मूल्य–आधारित ग्रेडिंग** : छात्रों को उनके नैतिक व्यवहार, ईमानदारी और सामाजिक जिम्मेदारी के लिए भी ग्रेड दिए जाने चाहिए।
- **प्रौद्योगिकी का उपयोग** : प्रौद्योगिकी–आधारित मूल्यांकन उपकरणों का उपयोग किया जाना चाहिए जो छात्रों के सीखने की प्रक्रिया और प्रगति का लगातार मूल्यांकन कर सकें।

इन समाधानों को प्रभावी ढंग से लागू करके, हम डॉ. कलाम के सपने को साकार कर सकते हैं और एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं जो ज्ञानवान, नैतिक और आत्मनिर्भर नागरिकों का निर्माण करे, जो भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के उनके लक्ष्य में योगदान दे सकें।

डॉ. कलाम के शैक्षिक विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के साथ सामंजस्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रमुख उद्देश्य डॉ. कलाम के विचारों के साथ कई बिंदुओं पर समानता परिलक्षित होती हैं, जो निम्नवत् हैं –

1. उद्देश्य

- **समग्र और बहु–विषयक शिक्षा** : यह नीति समग्र शिक्षा पर जोर देती है, जो विज्ञान, कला, और मानविकी को एकीकृत करती है, जो डॉ. कलाम के संतुलित दृष्टिकोण से मेल खाता है।
- **वैचारिक समझ और आलोचनात्मक सोच पर जोर** : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 रटने की प्रवृत्ति के बजाय वैचारिक समझ और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देती है, जो डॉ. कलाम की वैज्ञानिक सोच की अवधारणा के अनुरूप है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.14

- **कौशल विकास और उद्यमिता** : यह नीति व्यावसायिक शिक्षा और व्यावहारिक कौशल को महत्व देती है, जो डॉ. कलाम के कौशल विकास पर जोर देने के विचार से पूरी तरह से मिलता है।

2. शिक्षक : डॉ. कलाम ने हमेशा शिक्षकों को समाज का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ माना। उनके लिए शिक्षक सिर्फ ज्ञान देने वाले नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करने वाले सच्चे शिल्पकार थे। उन्होंने शिक्षकों की भूमिका के विषय में कई महत्वपूर्ण बिंदु प्रस्तुत किए:

- **चरित्र और नैतिकता का निर्माण** : डॉ. कलाम का मानना था कि एक शिक्षक का सबसे बड़ा कर्तव्य छात्रों में ईमानदारी और साहस जैसे मूल्यों का विकास करना है।
- **रचनात्मकता और जिज्ञासा प्रेरण** : वे चाहते थे कि शिक्षक छात्रों की जिज्ञासा को जगाएँ और उन्हें नए विचारों को विकसित करने के लिए प्रेरित करें।
- **छात्रों के लिए आदर्श** : डॉ. कलाम के जीवन में उनके शिक्षकों का गहरा प्रभाव था। वे मानते थे कि एक अच्छा शिक्षक अपने जीवन और व्यवहार से छात्रों के लिए एक आदर्श बनता है।
- **ज्ञान का विकास** : डॉ. कलाम का प्रसिद्ध विचार था कि एक शिक्षक का लक्ष्य छात्रों के दिमाग में आग लगाना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के साथ सामंजस्य : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 डॉ. कलाम के विचारों को व्यावहारिक रूप देने का प्रयास करती है। यह नीति शिक्षकों को एक महत्वपूर्ण भूमिका देती है, जो उनके शैक्षिक विचार और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के बीच एक गहरा वैचारिक संबंध स्थापित करती है:

- **नेतृत्वकर्ता व सुविधा प्रदाता** : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में शिक्षक को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा गया है जो सीखने की प्रक्रिया का नेतृत्व करता है।
- **सतत व्यावसायिक विकास** : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 शिक्षकों के लिए निरंतर प्रशिक्षण (50 घंटे प्रति वर्ष) और कौशल विकास पर जोर देती है।
- **सम्मान और सशक्तिकरण** : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का लक्ष्य शिक्षकों को समाज में उनका खोया हुआ सम्मान वापस दिलाना है, जिससे वे प्रभावी ढंग से अपने कर्तव्यों का पालन कर सकें।

3. शिक्षार्थी : डॉ. अब्दुल कलाम ने छात्रों को राष्ट्र का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन और भविष्य का निर्माता माना। वे स्वयं को एक वैज्ञानिक से ज्यादा एक शिक्षक मानते थे, और उन्होंने अपना जीवन छात्रों को प्रेरित करने के लिए समर्पित कर दिया। उनके अनुसार, छात्रों को ये भूमिकाएँ निभानी चाहिए:

- **लक्ष्य निर्धारण** : उनका सबसे प्रसिद्ध संदेश था कि "सपने वह नहीं जो आप नींद में देखें, सपने वह हैं जो आपको सोने नहीं देते।" वे छात्रों को बड़े लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें प्राप्त करने के लिए अथक प्रयास करने के लिए प्रेरित करते थे।
- **ज्ञान और कौशल का अर्जन** : वे छात्रों को लगातार ज्ञान प्राप्त करने की सलाह देते थे। उनके लिए, असफलता का मतलब अंत नहीं, बल्कि सीखने का पहला प्रयास है।

- **सवाल पूछना** : डॉ. कलाम के अनुसार, एक छात्र की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता सवाल पूछना है। वे मानते थे कि बिना सवाल किए कोई भी ज्ञान को पूरी तरह से नहीं समझ सकता।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 डॉ. कलाम के विचारों को एक व्यवस्थित नीतिगत रूप देती है। इस नीति में शिक्षार्थी को केंद्र में रखकर कई महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं:

- **समग्र विकास** : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पाठ्यक्रम को लचीला बनाती है ताकि छात्र अपनी रुचि के अनुसार विषय चुन सकें।
- **रटने के बजाय समझ पर जोर** : यह नीति रटने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करती है और आलोचनात्मक सोच, विश्लेषण और अवधारणात्मक समझ को बढ़ावा देती है।
- **बहु–विषयक दृष्टिकोण** : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में छात्रों को एक ही स्ट्रीम तक सीमित नहीं रखा गया है, जो डॉ. कलाम के वैज्ञानिक और रचनात्मक सोच के संयोजन को प्रोत्साहित करता है।

4. शिक्षालय : डॉ. कलाम ने शिक्षालय को सिर्फ ईंट और गारे से बनी इमारत नहीं, बल्कि रा?ष्ट्र के भविष्य का निर्माण करने वाले मंदिर के रूप में देखा। उनके अनुसार, विद्यालय वह स्थान है जहाँ बच्चों के दिमाग को प्रज्वलित किया जाता है और उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित किया जाता है।

- **सपनों का पोषण** : कलाम जी का मानना था कि एक विद्यालय का सबसे महत्वपूर्ण कार्य छात्रों में बड़े सपने देखने की क्षमता को पोषित करना है।
- **जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ावा** : वे चाहते थे कि विद्यालय छात्रों में वैज्ञानिक सोच और जिज्ञासा को बढ़ावा दें।
- **नैतिक और मानवीय मूल्यों का विकास** : कलाम जी ने हमेशा नैतिक शिक्षा पर जोर दिया, उनका मानना था कि विद्यालय को छात्रों को ईमानदारी, अनुशासन, और सहिष्णुता जैसे मूल्यों को सिखाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के साथ सामंजस्य : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में डॉ. कलाम के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए कई प्रावधान प्रस्तुत करती है। इस नीति के तहत, शिक्षालय का स्वरूप निम्नलिखित विशेषताओं के साथ परिभाषित किया गया है:

- **समग्र और बहु–विषयक** : शिक्षालय को विभिन्न विषयों, जैसे विज्ञान, कला, और व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत करना होगा।
- **समुदाय से जुड़ाव** : शिक्षालय अपने स्थानीय समुदाय, कलाओं और व्यवसायों से जुड़ेंगे, जिससे छात्रों को व्यावहारिक और सांस्कृतिक ज्ञान मिल सके।
- **व्यावहारिक शिक्षा** : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में प्रयोगात्मक शिक्षा को प्राथमिकता दी गई है, जहाँ छात्र सिर्फ सिद्धांत नहीं, बल्कि करके सीखते हैं।

5. पाठ्यक्रम : डॉ. कलाम के अनुसार, पाठ्यक्रम को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक कौशल और नैतिक मूल्यों का भी समावेश करना चाहिए।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.14

- **व्यावहारिक अनुप्रयोग** : उनका मानना था कि छात्रों को केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि उसे वास्तविक जीवन में कैसे लागू किया जाए, यह भी सिखाना चाहिए।
- **सृजनात्मकता और नवाचार** : उन्होंने हमेशा छात्रों को लीक से हटकर सोचने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने "इग्नाइटेड माइंड्स" की अवधारणा को बढ़ावा दिया।
- **नैतिक मूल्य और नेतृत्व कौशल** : डॉ. कलाम के लिए शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं, बल्कि एक अच्छा इंसान बनना भी था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के साथ सामंजस्य : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में कई ऐसे प्रावधान हैं जो पूर्ण रूप से डॉ. कलाम के शैक्षिक विचारों से प्रेरित लगते हैं:

- **समग्र विकास** : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का पाठ्यक्रम कलाम के समग्र विकास के विचार को दर्शाता है।
- **बहु–विषयक दृष्टिकोण** : यह नीति छात्रों को उनकी रुचि के अनुसार विषय चुनने की स्वतंत्रता देती है।
- **अनुभवात्मक षिक्षा** : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में अनुभवात्मक शिक्षा और खेल–एकीकृत शिक्षा पर जोर दिया गया है।
- **कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा** : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में कक्षा 6 से ही व्यावसायिक शिक्षा को मुख्य पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है।

सुझाव

- **शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार** : शिक्षकों के लिए विशेष कार्यशालाएं आयोजित की जानी चाहिए जो डॉ. कलाम के शिक्षा दर्शन पर केंद्रित हों, ताकि वे छात्रों को प्रेरित करने और उनमें रचनात्मकता जगाने की कला सीख सकें।
- **पाठ्यक्रम का व्यावसायीकरण** : माध्यमिक शिक्षा से ही छात्रों को उनके कौशल और रुचि के अनुसार व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।
- **नवाचार केंद्र** : प्रत्येक स्कूल में एक नवाचार केंद्र स्थापित किया जाना चाहिए, जहाँ छात्र अपने विचारों पर काम कर सकें और अपनी रचनात्मकता को व्यक्त कर सकें।
- **मूल्य–आधारित शिक्षा का कार्यान्वयन** : नैतिक और मानवीय मूल्यों को पाठ्यक्रम में एक अतिरिक्त विषय के रूप में नहीं, बल्कि सभी विषयों में एकीकृत करके पढ़ाया जाना चाहिए।
- **प्रौद्योगिकी का उपयोग** : शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग केवल ऑनलाइन कक्षाओं तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि छात्रों को डिजिटल कौशल और कोडिंग जैसी तकनीकी शिक्षा भी प्रदान की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि वे वर्तमान शिक्षा के लिए एक वैचारिक आधार प्रदान करते हैं। उनकी दूरदर्षिता ने उन कमियों को पहचाना जो भारतीय शिक्षा प्रणाली को जकड़े हुए थीं, जैसे– रटने पर अत्यधिक जोर एवं समग्र विकास की कमी। इन कमियों को दूर करने के लिए वे सदैव प्रयासरत रहे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के माध्यम से, भारत सरकार डॉ. कलाम के शिक्षा दर्शन को एक नीतिगत रूप देने का प्रयास कर रही है। यह नीति उनके विचारों को संस्थागत रूप दे रही है: जैसे–शिक्षार्थी को केंद्र में लाना, शिक्षक को सशक्त करना, विद्यालय को नवाचार और चरित्र निर्माण का केंद्र बनाना, पाठ्यक्रम को लचीला एवं व्यवसायिक बनाना, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के द्वारा छात्रों को तकनीकी ज्ञान प्रदान करना इत्यादि। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि डॉ.अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचार वर्तमान भारतीय शिक्षा दर्शन में न केवल प्रासंगिक हैं, अपितु आधुनिक शिक्षा प्रणाली की सफलता की कुंजी भी हैं। उनका शिक्षा दर्शन हमें याद दिलाता है कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य एक ज्ञानी, नैतिक और आत्मनिर्भर समाज का निर्माण करना है। उनकी सोच का वास्तविक प्रभाव तभी परिलक्षित होगा जब ये नीतिगत प्रावधान जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू होंगे।

संदर्भ

1. Altekar, A.S.(2009). Education in Ancient India, Isha Books, New Delhi,
2. Darjan. (2023). Reason, Religion, & Nation: Syed Ahmad Khan.
3. Grover, Virender. (1993). Political thinker of Modern India-17: AbulKalam Azad.
4. Gupta, S.P. & Gupta, Alka.(2023). History of Indian Education, Sharada Publication, Prayagraj.
5. Gupta, S.P.& Gupta,Alka.(2023). National Educational Policy -2020, Sharada Publication, Prayagraj.
6. Saxena, Manoj K. & G.S, Anu (2019). National Educational Policy on Higher Education, Prahat Publication, New Delhi, 1st Edition.
7. अरोड़ा,पंकज., शर्मा,उषा (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, रचनात्मक सुधारों की ओर, शिप्रा प्रकाशन, प्रतापगंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
8. कलाम, ए.पी.जे. अब्दुल. अग्नि की उड़ान. (विभिन्न संस्करण).
9. कलाम, ए.पी.जे. अब्दुल और राजन, वाई.एस. भारत 2020: एक विकसित राष्ट्र के लिए एक दृष्टिकोण. (विभिन्न संस्करण).
10. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–२०२०. (आधिकारिक दस्तावेज).
11. शर्मा, आर. (2018). ''डॉ. कलाम के शैक्षिक विचार और भारतीय शिक्षा प्रणाली''. जर्नल ऑफ एजुकेशन रिसर्च.
12. सिन्हा, वी. (2021). ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति–२०२०: एक विश्लेषण''. जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन.